# Today's Poem – 02.08.2014

विनाशी शरीरों से प्यार करना माना रोना

इसलिये एक अविनाशी बाप से प्यार करना

जो विनाशी चीजों में मोह रखते

वो देह-अभिमान के कारण रोते

तुम्हारे याद के हर कदमों में पदम् हैं, इससे ही अमर पद प्राप्त करना

अविनाशी ज्ञान रत्न जो बाप से मिलते हैं, उनका दान करना

आत्म-अभिमानी बन अपार खुशी का अनुभव करना

शरीरों से मोह निकाल सदा हर्षित रहना, मोहजीत बनना

महादानी बन फ्राकदिली से खुशी का खजाना बांटना

योग की शक्ति द्वारा हर कर्मेन्द्रिय को ऑर्डर में चलाना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!